जनमत के निर्धारण में प्रेस की भूमिका

जनमत के निर्धारण में प्रेस की भूमिका अहम है। सभी विकसित देशों में पत्रकारिता की राय को प्रमुखता से लिया जाता है। प्रेस के माध्यम से ही जनता की मांगे शासन तक पहुंच पाती है। प्रेस की अभिव्यक्ति की खास ताकत की वजह से ही इसे लोकतंत्र के चौथे स्तंभ का दरजा दिया गया है। देश के विकास में प्रेस की भूमिका अति महत्वपूर्ण है।

प्रेस की भूमिका एवं प्रभाव

राष्ट्रीय भावना के उदय एवं विकास में तथा राष्ट्रीय आंदोलन के प्रत्येक पहलू के विषय में - चाहे वह आर्थिक हो या सामाजिक, सांस्कृतिक हो या राजनीतिक - प्रेस की भूमिका उल्लेखनीय रही है। प्रेस के ही माध्यम से विभिन्न राजनीतिक नेताओं ने अपने विचारों को आम लोगों तक फैलाने में सफलता प्राप्त की।

प्रेस ने सभी ज्वलंत समस्याओं

समस्याओं को प्रभावशाली रूप से प्रकाशित किया। इस युग का मुख्य उद्देश्य जनजागरण था। इस उद्देश्य की प्राप्ति में प्रेस की भूमिका सक्रिय तथा उल्लेखनीय रही।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना से पहले समाचार पत्र देश में लोकमत का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। शिक्षित भारतीय पत्रकारिता को अपना बहुमूल्य समय देकर समाचार पत्रों के माध्यम से सरकार की नीतियों की आलोचना कर तथा विभिन्न विषयों पर लेख लिखकर देशवासियों को सरकार के विभिन्न कार्यों तथा देश की समकालीन स्थिति से अवगत करा रहे थे।

भारतीय समाचार-पत्रों ने लोगों को राजनीतिक शिक्षा देने का दायित्व अपने ऊपर ले लिया था। कांग्रेस को एक सशक्त राजनीतिक संस्था बनाने में प्रेस की भूमिका महत्वपूर्ण थी। भारत मित्र में राजनीतिक लेख प्रकाशित होते रहते थे।

अंग्रेजों द्वारा भारत का जो आर्थिक शोषण हो रहा था उसके विरुद्ध इस काल के प्रेस ने भी आवाज उठाई थी।

महत्वपूर्ण भारतीय अंग्रेजी पत्रों जैसे कि ट्रिब्यून (संपादक शीतलाकांत चटर्जी), कायस्थ समाचार (संपादक : सच्चिदानन्द सिन्हा) तथा एडवोकेट (सं० गंगा प्रसाद वर्मा) के विचार में 'भारत की वास्तविक समस्या राजनीति से कहीं अधिक आर्थिक थी'

प्रेस विभिन्न सामाजिक समस्याओं के विषय पर पर्याप्त चर्चा किया करता था जैसे हिन्दी प्रदीप में बालकृष्ण भट्ट का व्यंग्यात्मक लेख लिखा जाता था।

सरकार की विदेश नीति पर भी प्रेस में पर्याप्त चर्चा होती थी। भारतीयों द्वारा संपादित समाचार-पत्रों का जो दृष्टिकोण ब्रिटिश शासन के प्रति था उसी से उनका सरकार की विदेश नीति के प्रति भी दृष्टिकोण प्रभावित हुआ।

बढ़ते हुए राष्ट्रीय आंदोलन के हर चरण को, इसके प्रत्येक पहलू एवं राजनीतिक गतिविधियों को प्रेस ने प्रमुखता दी। देश के स्वतंत्रता-आंदोलन तथा राष्ट्र निर्माण में प्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

राष्ट्रीय आन्दोलन को लोकप्रिय बनाने, इसके प्रत्येक रूप को विकसित करने, जनता को लोकतांत्रिक संस्थाओं से अवगत कराने, सरकार की नीतियों

की समीक्षा कर जनता को प्रभावित करने, जनमत के निर्माण तथा विभिन्न दलों के विचारों से भारतवासियों को परिचित कराने, देश के विभिन्न भागों में सामाजिक वर्गों के बीच व्यापक विचारों का आदान-प्रदान कराने, प्रादेशिक लोगों के मध्य ~~ऐक्य~~ एक मानसिक संबंध स्थापित कराने, राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलनों (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि) को सफल बनाने, प्रादेशिक संस्कृतियों तथा साहित्य का विकास करने, विभिन्न कुरीतियों (जैसे जाति प्रथा, बाल-विवाह, छुआछूत) को दूर करने, जनतांत्रिक पुनर्निर्माण के कार्यक्रमों से लोगों को अवगत कराने, संसार में होने वाली घटनाओं से भारतवासियों को परिचित कराने और उनपर अपनी विचारधारा निर्मित करने और जनता के विचारों से सरकार को अवगत कराने का महत्वपूर्ण एवं कठिन कार्य इस काल के प्रेस ने अत्यंत कुशलता से पूरा किया था।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि भारतीय प्रेस ने राष्ट्रीयता के प्रचार-प्रसार में अभूतपूर्व योगदान किया। इसने भारतवासियों को एक सूत्र में बांधने,

विभिन्न समुदायों के बीच विरोध और वैमनस्य को दूर करने, विभिन्न राष्ट्रीय, सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को सुलझाने के लिए उपाय सुझाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह जनमत का प्रबल उत्प्रेरक और साम्राज्य विरोधी भावना का मुखर वाहक बन गया।

निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि प्रेस हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन और राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया का भारी स्तंभ बन गया।

— OO —